



दान्की का
जलता हुआ हृदय

मक्सिम गोर्की

दान्को का जलता हुआ हृदय

मक्सिम गोर्की



आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू



अनुराग ट्रस्ट



मक्सिम गोर्की

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 15 रुपये
पहला भारतीय संस्करण 2005

प्रकाशक
अनुराग ट्रस्ट
डी - 68, निरालानगर
लखनऊ - 226020

लेजर टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन
मुद्रक : वाणी ग्राफिक्स, अलीगंज, लखनऊ

दान्को का जलता हुआ हृदय



“बहुत, बहुत पहले एक जाति थी। वह जिस जगह रहती थी उसके तीन ओर अगम्य जंगल छाये थे और चौथी ओर घास के मैदान फैले थे। इस जाति के लोग तगड़े, बहादुर और खुशमिजाज थे। लेकिन बुरे दिनों ने उन्हें आ घेरा। अन्य जातियों का वहाँ धावा हुआ और उन्होंने उनको जंगल की गहराइयों में खदेड़ दिया। जंगल अंधकार में डूबा हुआ और दलदली था। कारण कि वह बहुत पुराना था और पेड़ों की शाखाएँ ऐसे कसकर एक दूसरी के साथ गुँथी थी कि आकाश की शक्ल तक नजर नहीं आती थी और घनी हरियाली को चीरकर दलदल तक पहुँचने में सूरज की किरणों की सारी शक्ति चुक जाती थी। लेकिन जब वे उस पानी तक पहुँचती थी, तो विषैली गन्ध उठने लगती थी, जिससे लोग मरने लगते थे।

“तब उस जाति की स्त्रियाँ और बच्चे रोने-पीटने लगे और पुरुष चिन्ता में

घुलने लगे। जंगल से निकल जाने के सिवा कोई चारा न रहा, लेकिन बाहर निकलने के दो ही रास्ते थे—एक पीछे की ओर, जहाँ सशक्त और जानी दुश्मन थे, दूसरा आगे की ओर, जहाँ दैत्याकार पेड़ उनका रास्ता रोके खड़े थे, जिनकी मजबूत शाखाएँ एक-दूसरी के साथ मजबूती से गुँथी थीं और जिनकी टेढ़ी-मेढ़ी जड़ें दलदली कीचड़ में बहुत गहरी चली गयी थीं। ये पत्थरनुमा पेड़ दिन के धूसर अँधेरे में निर्वाक और निश्चल खड़े रहते और रात को जब अलाव जलते, तो लोगों के गिर्द अपना घेरा और भी कस लेते तथा स्तेपी की उन्मुक्त गोद के अभ्यस्त लोग दिन-रात अँधेरे की दीवारों में बन्द रहते जो मानो उन्हें कुचलने की कसम खाये बैठी थीं। इस सबसे भी भयानक थी हवा, जो पेड़ों की चोटियों पर से सनसनाती और फुफकारती हुई गुजरती और ऐसा मालूम होता मानो समूचा जंगल उन लोगों के लिए किसी भयंकर शोक-गीत से गूँज उठा हो। वे एक बहादुर जाति के लोग थे और मृत्यु-पर्यन्त उन लोगों से लड़ते, जिन्होंने उन्हें एक बार हरा दिया था। लेकिन वे लड़ाइयों में अपने को मरने नहीं दे सकते थे, क्योंकि उनके अपने जीवन-आदर्श थे और अगर वे मर जाते तो उनके जीवन-आदर्श भी उनके साथ ही नष्ट हो जाते। इसीलिए वे दलदल की जहरीली गंध और जंगल के घुटे-घुटे शोर वाली लम्बी रातों में बैठे हुए अपने भाग्य के बारे में सोचते रहते थे। वे सोच में डूबे बैठे होते, आग की लपटों की परछाइयों उनके इर्द-गिर्द मूक नृत्य में





उछलती-कूदती और उन सबको ऐसा लगता कि ये निरी परछाइयाँ ही नृत्य नहीं कर रही हैं, बल्कि जंगल और दलदल की प्रेतात्माएँ अपनी विजय का उत्सव मना रही हैं... लोग ऐसे बैठे-बैठे सोचते रहते। मगर परेशान करने वाले विचार आदमी को जितना निचोड़ते हैं, उतना और कोई चीज नहीं, न श्रम, न स्त्रियाँ। लोग चिन्ता से दुबलाने लगे... उनके हृदयों में भय उत्पन्न हुआ और उसने उनकी मजबूत

बाहों को जकड़ लिया। विषैली गन्ध के कारण मरे लोगों के शवों पर स्त्रियों का विलाप और भय से निःशक्त हुए जीवितों पर उनका रोना-कलपना आतंक पैदा करता। और इस तरह जंगल में कायरतापूर्ण शब्द भनभनाने लगे—पहले धीमे और दबे-दबे और फिर निरन्तर अधिक खुलकर... अन्त में वे दुश्मन के पास जाकर उसे अपनी आजादी भेंट करने की सोचने लगे। मृत्यु के भय ने उन्हें इतना डरा दिया था कि हर कोई गुलाम की भाँति जीवन बिताने को तैयार हो गया था... लेकिन तभी दान्को आया और उसने ही उन सबकी रक्षा की।

“दान्को उन्हीं में से एक सुन्दर जवान था। सुन्दर लोग हमेशा साहसी होते

हैं। और उसने अपने साथियों से कहा—

“केवल सोचने से राह की चट्टानें नहीं हट जातीं। जो कुछ करते नहीं, वे कुछ पाते नहीं। सोच और परेशानी में हम अपनी शक्तियाँ क्यों बरबाद कर रहे हैं? उठो, जंगल को चीरते हुए हम आगे बढ़ चलें—कहीं न कहीं तो इसका अन्त होगा ही—हर चीज का अन्त होता है! चलो, आगे बढ़ें!”

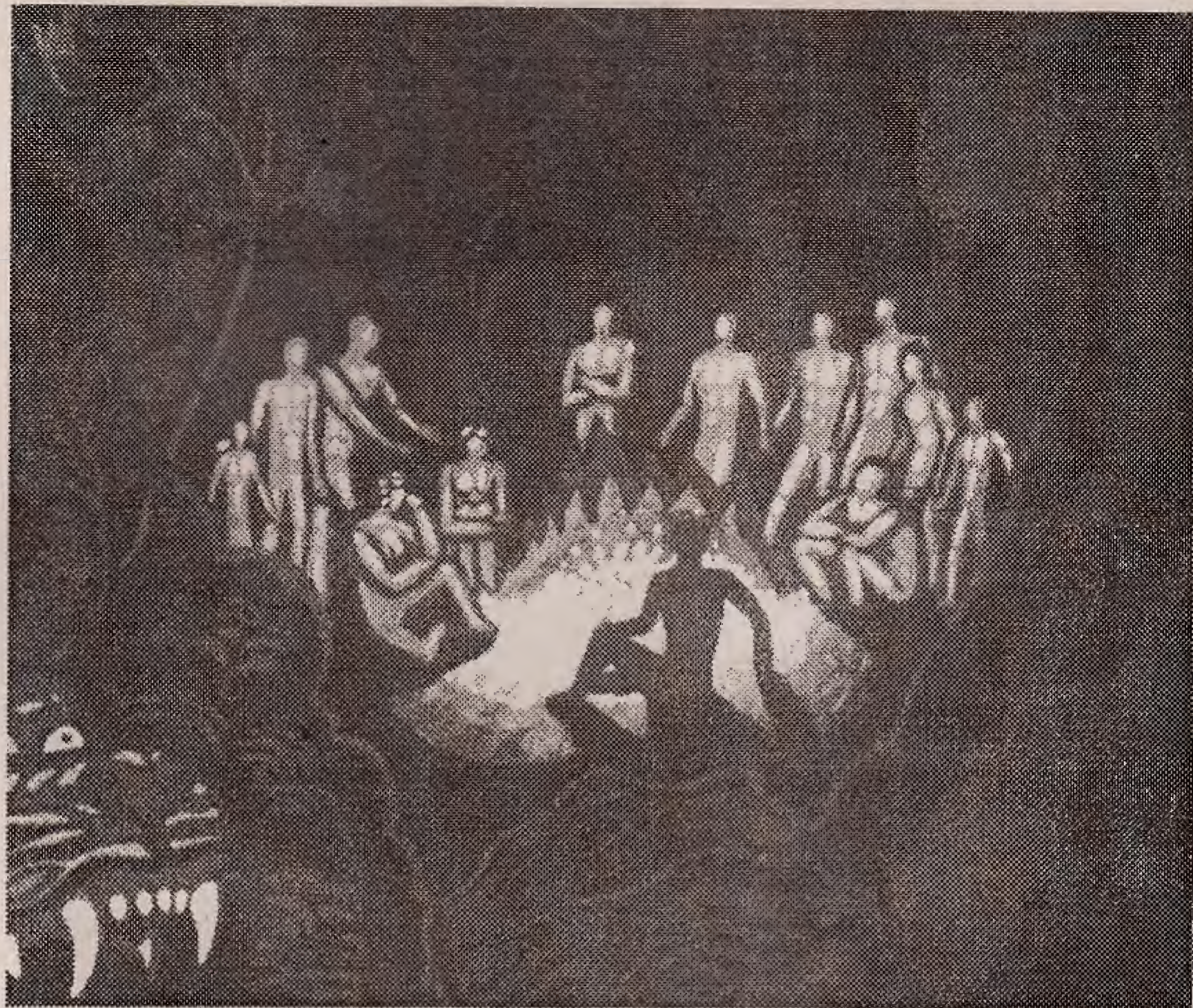
“लोगों की आँखें उसकी ओर उठीं और उन्होंने देखा कि वह उनमें सबसे श्रेष्ठ है, क्योंकि उसकी आँखें शक्ति और जीवन से दमक रही थीं।”

“हमारी अगुवाई करो!” उन्होंने कहा।

“और उसने उनकी अगुवाई की...

“सो दान्को उन्हें ले चला। वे उत्साह से उसके साथ चले, क्योंकि उसमें उनका विश्वास था। रास्ता बड़ा विकट था! अँधेरा था, कदम-कदम पर दलदल अपना सड़ा हुआ लालची मुँह बाए थी। वह लोगों को निगल जाती थी और पेड़ मजबूत दीवारों की भाँति राह रोक लेते थे। उनकी शाखाएँ कसकर एक-दूसरी के साथ गुँथी थीं और साँपों की भाँति हर तरफ फैली हुई थीं उनकी जड़ें। हर कदम आगे बढ़ने के लिए उन्हें अपने रक्त और पसीने से कीमत चुकानी पड़ती। देर तक वे चलते रहे... जंगल अधिक घना होता गया और लोगों की शक्ति क्षीण पड़ती गयी! और तब वे दान्को के खिलाफ भुनभुनाने लगे। कहने लगे कि वह निरा लड़का और अनुभवहीन है और जाने हमें कहाँ ले आया है। लेकिन वह उनके आगे-आगे चलता रहा। उसके मन में किसी तरह की शंका और चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी।

“लेकिन एक दिन तूफान ने जंगल को घेर लिया और पेड़ों में आतंकपूर्ण सनसनाहट दौड़ गयी। और तब इतना घना अँधेरा छा गया कि लगता था जैसे वे तमाम रातें एक साथ वहाँ जमा हो गयी हों जो जंगल के जन्म से लेकर अब तक बीती थीं। और वे छोटे-छोटे लोग भीमाकार पेड़ों तथा तूफानी गरज के बीच चलते रहे। वे चलते जाते, भीमाकार पेड़ चरचराते, भयंकर गीत-से गाते और पेड़ों की फुनगियों के ऊपर बिजली चमकती, क्षण भर के लिए एक ठण्डी नीली रोशनी जंगल को जगमगा देती और फिर उतनी ही तेजी से गायब हो



जाती। लोगों के हृदय भय से काँप उठते। बिजली की ठण्डी रोशनी में पेड़ जीते-जागते मालूम होते—अपनी गठीली लम्बी बाँहों को फैलाते और उन्हें गूँथकर घना जाल बिछाते—से, ताकि ये लोग, जो अंधकार की कैद से छूटने की कोशिश कर रहे थे, उसमें फँसकर रह जायें। शाखाओं के घटाटोप में से भी कोई ठण्डी, काली और भयानक चीज उनकी ओर घूर रही थी। बड़ा ही बीहड़ मार्ग था वह। और लोग, जो थककर चूर-चूर हो गये थे, हिम्मत हार बैठे। लेकिन शर्म के मारे वे अपनी कमजोरी स्वीकार न करते और अपना गुस्सा तथा खीझ दान्को पर उतारते जो उनके आगे-आगे चल रहा था। वे उस पर आरोप लगाते कि वह उनकी अगुवाई करने की योग्यता नहीं रखता—तो ऐसी हालत थी!

“वे रुक गये और उस काँपते हुए अँधेरे और जंगल की विजयोन्मत्त गरज के बीच थकान तथा गुस्से से बेहाल उन लोगों ने दान्को को भला-बुरा कहना शुरू किया।

“‘तुम कमीने और दुष्ट हो! तुम्हीं ने हमें इस मुसीबत में फँसाया है,’ वे कह उठे, ‘इसके लिए तुम्हें अब अपनी जान से हाथ धेने पड़ेंगे!’

“दान्को उनके सामने छाती तानकर खड़ा हो गया और चिल्लाकर बोला—

“‘तुमने कहा—‘हमारी अगुवाई करो।’ और मैंने तुम्हारी अगुवाई की। मुझमें तुम्हारी अगुवाई करने की हिम्मत है और इसीलिए मैंने इसका बीड़ा उठाया। लेकिन

तुम? तुमने अपनी मदद के लिए क्या किया? चलते ही रहे और अधिक लम्बे रास्ते के लिए अपनी शक्ति सुरक्षित नहीं रख पाये। भेड़ों के रेवड़ की भाँति तुम केवल चलते ही रहे।’

“उसके इन शब्दों ने उन्हें और भी ज्यादा भड़का दिया।

“‘हम तुम्हारी जान ले लेंगे! तुम्हारी जान ले लेंगे।’ वे चीख उठे।

“जंगल गूँज रहा था, गूँज रहा था, उनकी चीखों को प्रतिध्वनित कर रहा





था। बिजली अँधेरे की चिंदियाँ बिखेर रही थी। दान्को की नजर उन पर टिकी थी, जिनके लिए उसने इतना कष्ट उठाया था और उसने देखा कि वे दरिन्दे बने हुए हैं। एक अच्छी-खासी भीड़ उसे घेरे थी, लेकिन उनके चेहरों पर सद्भावना का कोई चिन्ह नजर नहीं आ रहा था और उनसे किसी तरह की दया की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। तब उसके हृदय में गुस्से की एक आग-सी धधकी, लेकिन लोगों के प्रति दयाभाव ने उसे शान्त कर दिया। वह लोगों को चाहता था और उसे डर था कि उसके बिना वे नष्ट हो जायेंगे। उन्हें बचाने और सुगम पथ पर ले जाने की एक महती आकांक्षा की ज्योति उसके हृदय में जल उठी और इस महान ज्योति की तेज लपटें उसकी आँखों में नाचने लगीं... और यह

देखकर लोगों ने सोचा कि वह आपे से बाहर हो गया है और इसी कारण उसकी आँखों में आग की प्रखर लौ थिरक रही है। वे भेड़ियों की भाँति चौकस हो गये—इस आशंका से कि वह अब उन पर टूट पड़ेगा और उसके इर्द-गिर्द और भी निकट आ गये ताकि उसको दबोच लें और मार डालें। उसने उनके इस इरादे को भाँप लिया, जिससे उसके हृदय की ज्योति और भी प्रखर हो उठी, क्योंकि उनके इस विचार से उसका दिल तड़प उठा था।

“और जंगल अपना शोकपूर्ण गीत गाता जा रहा था, बादल गरजते जा रहे थे और पानी जोर से बरसता जा रहा था...

“‘‘लोगों के लिए मैं क्या करूँ?’’ दान्को की आवाज बादलों की गरज को बेधती हुई गूँज उठी।





“और सहसा उसने अपना वक्ष चीर डाला, अपने हृदय को नोचकर बाहर निकाला और उसे अपने सिर से ऊंचा उठा दिया।

“वह सूरज की भाँति दमक रहा था, उसका प्रकाश सूरज से भी ज्यादा तेज था। जंगल की गरज शान्त हो गयी और इस मशाल का—मानव जाति के प्रति महान प्रेम की इस मशाल का—आलोक फैल चला। प्रकाश से अंधकार के पाँव उखड़ गये और वह काँपता-थरथराता हुआ दलदल के सड़े-गले गर्त में कूदकर जंगल की अतल

गहराइयों में समा गया। और लोग आश्चर्य के मारे बुत बने वहीं खड़े रह गये।

““बढ़े चलो!” दान्को ने चिल्लाकर कहा और अपने जलते हुए हृदय को खूब ऊँचा उठाकर लोगों का पथ जगमगाता हुआ तेजी से आगे बढ़ चला।

“मंत्रमुग्ध से लोग उसके पीछे हो लिये। तब जंगल एक बार फिर भुनभुनाने और अपनी फुनगियों को अचरज से हिलाने लगा। लेकिन उसकी यह भुनभुनाहट दौड़ते हुए लोगों के पाँवों की आवाज में खो गयी। लोग अब साहस और तेजी के साथ भागते हुए आगे बढ़ रहे थे—जलते हुए हृदय का अद्भूत आलोक उन्हें अनुप्राणित कर रहा था। लोग मरते तो अब भी थे, लेकिन आँसुओं और शिकवे-शिकायत के बिना। दान्को सबसे आगे बढ़ा जा रहा था और उसका हृदय दहकता ही जा रहा था, दहकता ही जा रहा था!

“सहसा जंगल ने उनके लिए रास्ता बना दिया, रास्ता बना दिया और खुद

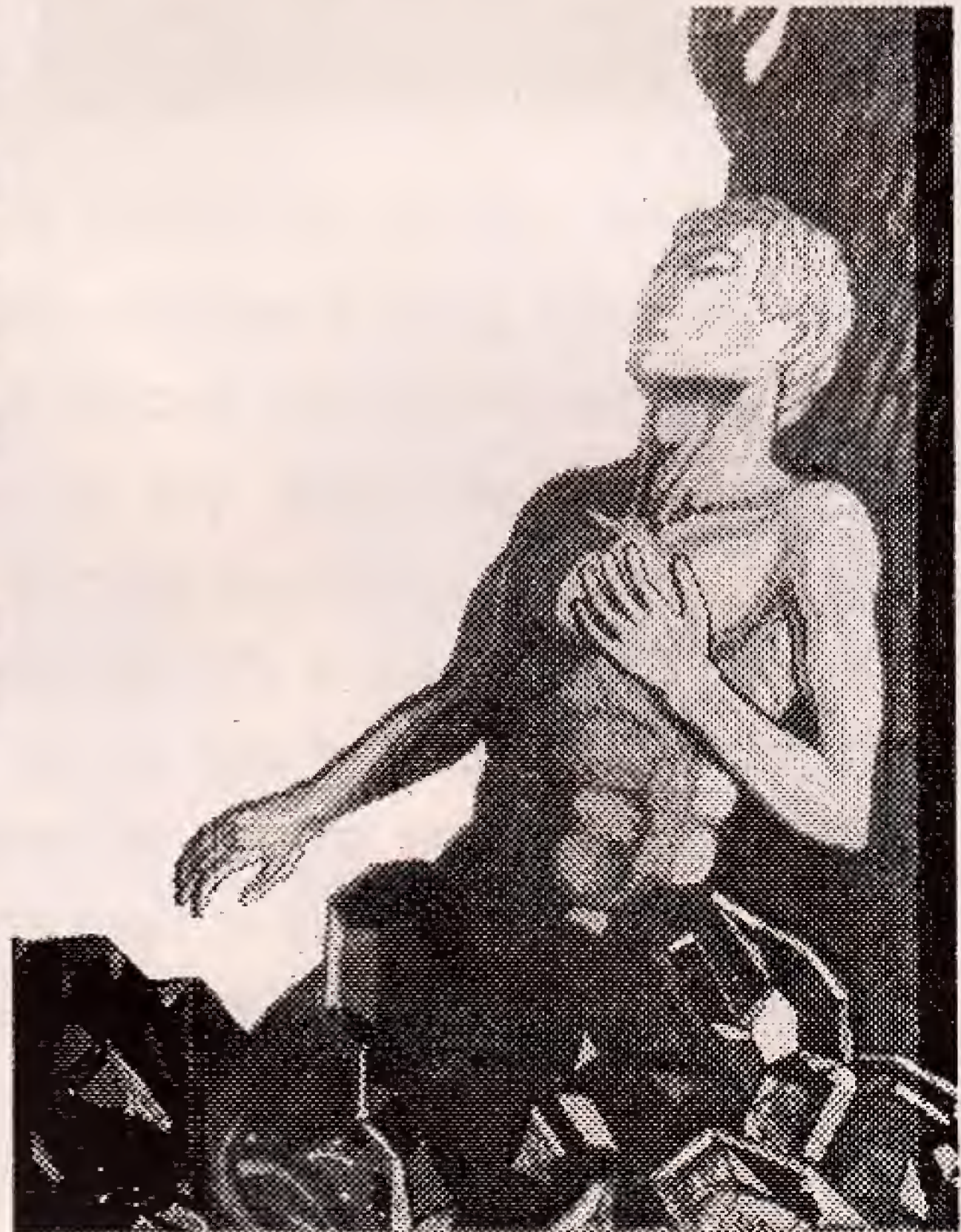
पीछे रह गया—मूक और घना। और दान्को तथा वे सभी लोग सूरज की धूप और बारिश से धुली हवा के सागर में हिलोरें लेने लगे। तूफान अब उनके पीछे, जंगल के ऊपर था, जबकि यहाँ सूरज सोना बिखेर रहा था, स्तेपी राहत की साँस ले रही थी, वर्षा के मोतियों में घास चमक रही थी और नदी सोने की तरह चमचमा रही थी... साँझ का समय था और छिपते हुए सूरज की किरणों में नदी वैसी ही लाल लग रही थी जैसी लाल थी गर्म खून की वह धारा जो दान्को की फटी छाती से बह रही थी।

“वीर दान्को ने अन्तहीन स्तेपी के विस्तार पर नजर डाली, स्वाधीन धरती पर आनन्द से छलछलाती नजर, और गर्व से हँसा। फिर जमीन पर गिरा और मर गया।

“लोग तो खुशी में मस्त और आशा से ओतप्रोत थे। वे उसे मरते हुए नहीं देख पाये और न यह कि उसका वीर हृदय उसके मृत शरीर के पास पड़ा अभी तक जल रहा था। सिर्फ एक सतर्क आदमी की ही दृष्टि उसकी ओर गयी और उसने डरकर उस गर्वीले हृदय को रौंद डाला... चिंगारियों की एक फुहार—सी उसमें से निकली और वह बुझ गया...”

“यही वजह है कि स्तेपी में तूफान के पहले नीली चिंगारियाँ दिखाई देती हैं!”

(1894)





मक्सिम गोर्की



अनुसंधान ट्रस्ट

लखनऊ